हिन्दू धर्माभिमानी
महात्मा गांधी
सं०
७२
विश्व हिन्दू परिषद प्रकाशन

प्रस्तावना

वर्तमान युग के राष्ट्रीय जागरण में महात्मा गांधी का योग-दान सब दृष्टि से महान था। साथ ही वह 'कट्टर हिन्दू' भी थे। वह अपने को हिन्दू कहने में सदा गौरव का अनुभव करते थे। उनका विश्वास था कि नैतिकता और सदाचार सदगुण सम्पन्न हिन्दू धर्म ही मानव-मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। मजहबी तास्सुब, साम्प्रदायिक कलह, भोगवादी अर्थ प्रधान प्रतिस्पर्द्धा समाप्त होकर पृथ्वी पर स्वर्ग उतारा जा सकता है। विश्व के सभी मानव सुख शांति से रह सकते हैं।

उन्होंने अपेक्षा की थी कि स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद स्वतन्त्र समृद्ध प्रगतिशील भारत में जो ईसाई या मुसलमान रह जायेंगे वह अपने पूर्वजों के धर्म को पुनः अपना लेंगे।

यह पूछे जाने पर कि जो लोग पुनः हिन्दू धर्म में लौटना चाहें इनके प्रति हमारा क्या रुख हो गांधी जी ने कहा।

"हम सिर्फ कहेंगे—स्वागत है, आप आइये।

शुद्धि संस्कार के संबंध में उन्होंने कहा।

"मैं तो इन से केवल सौ बार राम नाम लेने को कहूंगा।"

विश्व हिन्दू परिषद ने धर्माचार्यों की सहमति से परावर्तन संस्कार को स्वीकृति देकर गांधी जी के सपनों को साकार रूप दिया है। हिन्दू धर्म के दरवाजे सबके लिए खुले हैं, सब का स्वागत है। जयतु विश्व हिन्दू

द्वितीय संस्करण-२०००
मूल्य १/- रूपया

जगदम्बा प्रसाद वर्मा
प्रचार मन्त्री, वि. हि. प. उ. प्र.

प्रस्तावना

वर्तमान युग के राष्ट्रीय जागरण में महात्मा गांधी का योगदान सब दृष्टि से महान था। साथ ही वह 'कट्टर हिन्दू' भी थे। वह अपने को हिन्दू कहने में सदा गौरव का अनुभव करते थे। उनका विश्वास था कि नैतिकता और सदाचार सदगुण सम्पन्न हिन्दू धर्म ही मानव-मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। मजहबी तास्सुब, साम्प्रदायिक कलह, भोगवादी अर्थ प्रधान प्रतिस्पर्द्धा समाप्त होकर पृथ्वी पर स्वर्ग उतारा जा सकता है। विश्व के सभी मानव सुख शांति से रह सकते हैं।

उन्होंने अपेक्षा की थी कि स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के बाद स्वतन्त्र समृद्ध प्रगतिशील भारत में जो ईसाई या मुसलमान रह जायेंगे वह अपने पूर्वजों के धर्म को पुनः अपना लेंगे।

यह पूछे जाने पर कि जो लोग पुनः हिन्दू धर्म में लौटना चाहें इनके प्रति हमारा क्या रुख हो गांधी जी ने कहा।

"हम सिर्फ कहेंगे—स्वागत है, आप आइये।

शुद्धि संस्कार के संबंध में उन्होंने कहा।

"मैं तो इन से केवल सौ बार राम नाम लेने को कहूंगा।"

विश्व हिन्दू परिषद ने धर्माचार्यों की सहमति से परावर्तन संस्कार को स्वीकृति देकर गांधी जी के सपनों को साकार रूप दिया है। हिन्दू धर्म के दरवाजे सबके लिए खुले हैं, सब का स्वागत है।

जयतु विश्व हिन्दू

द्वितीय संस्करण-२०००
मूल्य १/- रूपया

जगदम्बा प्रसाद वर्मा
प्रचार मन्त्री, वि. हि. प. उ. प्र.

प्रातः स्मरणीय महात्मा गांधी

—प०पू० श्री गुरूजी

भारत में स्वतंत्रता आंदोलन अपने हाथ में लेने के पूर्व महात्मा जी अफ्रीका जाया करते थे। उन दिनों वहां अंग्रेजों का साम्राज्य था। वहां रहने वाले नीग्रो अंग्रेजों के दमन के शिकार हो रहे थे। अंग्रेज नीग्रो को मानव मानने के लिए भी राजी नहीं थे। योरोपीय लोगों की बस्ती में नीग्रो को मकान बनाने को मनाही थी। अपने पर काले आदमी की छाया का स्पर्श तक न हो, ऐसा अंग्रेजों का व्यवहार था। महात्मा जी ने इस अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का संकल्प किया और सत्याग्रह तंत्र का प्रथम प्रयोग अफ्रीका में किया। महात्माजी के पीछे कौन बल था ? सत्य और न्याय के लिए पवित्र भाव से यातनाएं सहने की सिद्धता ही महात्मा जी का बल था। महात्मा जी के इस कार्य से ही नीग्रो जनों में स्वतंत्रता की लालसा जाग उठी।

हिन्दुत्व की प्रेरणा

म०गांधी द्वारा अफ्रीका में मानवमात्र की एकता की जो सीख दी गई उसे जैसे हम लोग भूले, वैसे ही हम लोग भूल

गए उनकी अपनी देश में दी गई शिक्षा को। देश की यच्चयावत् जनता भारत माता की पुत्र है और उस की स्वतंत्रता के लिए हमें लड़ना चाहिए, यह प्रेरणा गांधी जी के अन्तःकरण में कहां से उत्पन्न हुई ? सभी धर्मों के प्रति आदर की भावना कैसे उत्पन्न हुई ?

एकता का मार्ग हिन्दू जीवन

यह भावना हिन्दू धर्म से निर्माण हुई। अपने में अनेक भेद होने पर भी 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति', यह हमारी सीख है। गांधी जी के जीवन में यह पूर्णता घुल चुकी थी। वे कहा करते थे, "मै कट्टर हिन्दू हूं इसलिए मानवमात्र पर ही नहीं तो जीव मात्र पर प्रेम कर सकता हूं' इनके जीवन में व राजनीति में "न हिंस्यात् सर्व भूतानि" इस तत्व के अनुसार सत्य व अहिंसा की प्रधानता कट्टर हिन्दुत्व से ही मिली थी।

गांधी जी को स्वामी रामकृष्ण परमहंस के बारे में अत्यधिक आदर था। उनके चरित्र की छोटी सी प्रस्तावना लिखते हुए उन्होंने कहा है कि "यह चरित्र याने सत्य का साकार प्रतीक है," स्वा० रामकृष्ण ने कट्टर हिन्दू रहकर सारी जीव सृष्टि पर प्रेम किया था। मुझे लगता है कि जिस व्यक्ति में हिन्दुत्व के बारे में शुद्ध भाव है, वही इस प्रकार का प्रेम कर सकता है। अन्य किसी के लिए यह संभव नहीं है।

एक बार मुझे मुसलमानों के एक सूफी-पंथी का पत्र प्राप्त

हुआ। उसने लिखा था कि दुनिया में इस समय ईश्वर को न मानने वालों का प्रभाव बढ़ रहा है इसलिए हम 'ईश्वर मानने वालों' को संगठित होना चाहिए।

इस सूफी व्यक्ति ने जैसा सुझाया, वैसा दुनिया के सब धर्मवादियों का संगठन कैसे किया जाए? अपने हिन्दू धर्म का ही उदाहरण लें, तो उसमें कोई राम कहता है, तो कोई कृष्ण। उसमें अनेक पंथ भेद हैं। भारत का जैन धर्म ही लें, उसे ईश्वर की कल्पना ही मान्य नहीं। बौद्ध केवल बुद्ध को ही मानते हैं। इसके अलावा ईसाई, मुसलमान, बहाई, आदि जैसे अनेक पंथ हैं। ऐसी स्थिति में ईश्वर वादियों को एकत्र कैसे किया जाय?

मैंने उस सूफी से भेंट की। उससे पूछा कि यह कैसे हो? उसने कहा कि उसके पास उपाय है। मैंने कहा, "है, तो बहुत अच्छी बात है, हम सभी उसे अपने व्यवहार में लायें"। उस सूफी व्यक्ति ने उपाय सुझाया कि सभी को मुसलमान बन जाना चाहिए। फिर सब कुछ अपने आप ठीक हो जायगा। परन्तु इसे अन्य पन्थ के लोग कैसे मानेंगे। यही आग्रह वह अपने अपने पंथ के लिए रखेंगे।

इस सूफी व्यक्ति को यह पता नहीं चला कि इस दुनिया में एक सर्व समावेशक तत्वज्ञान है। उसे हिन्दू कहो या न कहो— वह जागतिक तत्वज्ञान हैं, मानवतावाद का तत्वज्ञान है। कोई राम कहेगा, कोई कृष्ण, कोई अल्ला। भगवान अन्ततः एक ही

है, यह कहने वाला केवल हिन्दू धर्म ही है। अनेक पंथभेद के लोग होने पर भी, या भविष्य में और पंथ निर्माण होने पर भी ये सभी मार्ग एक ही परमेश्वर की ओर ले जाने वाले हैं, यह उदारता की भावना कट्टर हिन्दुत्व के बिना निर्माण हो पाना सरल नहीं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस और गांधी जी

महात्मा जी को अपने समाज के दोष भी दिखाई देते थे। उन्हें दूर करने के लिए उन्होंने भरसक प्रयास किया। उसके लिए उन्होंने लोगों का विरोध भी सहन किया। वे दोष हमें दूर करना चाहिये। समाज एकरस हो, इसके लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए। "आ चांडालात् अप्रतिहत: यस्य प्रेम प्रवाह:"। स्वा० रामकृष्ण के विषय में एक शिष्य ने कहा है कि एक बार स्वामी जी किसी कुएं पर पानी पीने के लिए गए। पानी भरने वाले ने उनसे कहा कि "महाराज! आप ब्राह्मण दिखाई दे रहे हैं, आपको पानी कैसे पिलाऊं ?" रामकृष्ण ने कहा तो इससे क्या हुआ ? राम नाम से पत्थर भी तर गए। तू तो मनुष्य है। राम का नाम ले और पानी पिला। उसने राम का नाम लिया और स्वामी जी को पानी पिलाया। रामकृष्ण के ये जो विचार हैं, उनका प्रत्यक्ष आचरण ही गांधी का जीवन था।

अखिल जीव-सृष्टि पर प्रेम करने वाले हिन्दू-धर्म की प्रेरणा से ही समाज में एकात्मता की अनुभूति निर्मित होगी।

गांधी जी की भविष्यवाणी

जिस हिन्दूधर्म के बारे में इतना बोलते हैं इस धर्म का क्या कुछ भविष्य भी है ? महात्मा जी ने हिन्दू-धर्म के भविष्य पर विचार व्यक्त किए हैं। 'फ्यूचर आफ हिन्दुइज्म' शीर्षक के अन्तर्गत उन्होंने लिखा है – 'हिन्दू-धर्म याने न रुकने वाला, आग्रह के साथ आगे बढ़ने वाला, सत्य की खोज का मार्ग है। आज यह धर्म थका हुआ सा आगे जाने की प्रेरणा देने में सहायक प्रतीत नहीं होता दीखता है। इसका कारण है कि हम थक गए हैं, धर्म नहीं। जिस क्षण हमारी यह थकावट दूर होगी उस क्षण हिन्दू धर्म का भारी विस्फोट होगा और जैसा भूत काल में कभी नहीं हुआ उतने बड़े प्रमाण में हिन्दू-धर्म अपने प्रभाव और प्रकाश से दुनिया में चमक उठेगा।"

महात्माजी की यह भविष्यवाणी पूरी करने की जिम्मेदारी हमारी है।

महात्माजी का स्मरण करते समय उनकी सीख के अनुसार शील का, चारित्र्य का, स्वत्व का, पोषण करना चाहिए।

हिन्दू धर्म का जागरण हो

महात्माजी द्वारा बताई गई सारी बातें आचरण में लानी हों तो यह शिक्षायें देने वाले महान हिन्दू-धर्म को पुनः जागृत करना होगा। धर्म के बगैर मानव-समाज याने परस्पर

विनाश करने वाला श्वापदों का समाज होगा और इससे बचने के लिए ही अपने स्वार्थों को नियंत्रित कर, समाज के साथ पूर्णतया एक रुप होकर, झूठा अभिमान त्याग कर, अखिल मानव समाज पर प्रेम करने वाले हिन्दू-धर्म के कट्टर अभिमान पर इस भारत भूमि का पुनः निर्माण करना होगा। अतः हिन्दू-धर्म जागृत कर समाज के प्रत्येक व्यक्ति में उसका श्रेष्ठत्व प्रस्थापित करना चाहिए। दुनिया पर प्रेम करने वाला सर्व समन्वयवादी देश और एक आदर्श समाज के रुप में खड़े होंगे, यह निश्चय आज हमें करना होगा। तभी महात्माजी के समान प्रातः स्मरणीय व्यक्ति का पुण्य स्मरण सच्चे अर्थ में किया जा सकेगा। भारत-भक्ति स्तोत्र कहते समय प्रातः स्मरणीय, वंदनीय व्यक्ति के रुप में उनके प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त किया करता हूं— आज सब के साथ वे ही भावनाएं मैंने व्यक्त की हैं।"

× × ×

'महात्माजी के व्यक्तित्व के अनेक पहलू थे। उनकी हिन्दू धर्म पर श्रद्धा थी। हिन्दू जीवन का मानबिंदु रुप गोवंश का संरक्षण तथा इसकी हत्या सर्वथा बन्द हो, इसलिए अपना शासन प्रभावी कानून बनाए, इसके लिए उन्होंने प्रयास किया। अपने अस्पर्श्य कहे जाने वाले उपेक्षित बांधवों को सम्मान का स्थान दिलाने के लिए, उनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि सब दृष्टि से उन्नति करने का उन्होंने प्रयत्न किया। अशिक्षित, और आर्थिक कठिनाइयों में जीवन बिताने वाले बनवासी बांधवों को परधर्मियों द्वारा धर्म-भ्रष्ट किए जाने के कार्य

का तीव्र निषेध किया। समाज को सुव्यवस्थित कर संयमित जीवन बनाने वाले हिन्दू धर्म की जगह, गुंडागर्दी, अत्याचार बल प्रयोग आदि का अवलंबन करना सिखाने वाले, कुसंस्कार बढ़ाने वाले, समाजवाद, साम्यवाद आदि नामों से भौतिकता का प्रचार करने वाले कार्य कलापों के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट विरोध प्रकट किया।'

× × ×

अनेक विवादास्पद अव्यवहार्य सिद्ध हुए बिचारों का आग्रह-पूर्वक प्रतिपादन करने के बाद भी उनकी स्मृति लोग अपने अन्तःकरण में सदैव आदरपूर्वक संजो कर रख रहे हैं, कारण है उनका अटूट आत्मविश्वास, धर्म के श्रेष्ठ जीवन मूल्यों पर निष्ठा, तदनुरुप स्वतः के जीवन को बनाने की सच्चाई, अपना दोष, अपनी भूल, प्रकट रुप से मान्य करने की सत्य-प्रियता आदि असामान्य गुणों के कारण उनकी स्मृति रखना आवश्-यक है।

इसलिये उनके गुणों को समझकर अनुकरण करने का निश्चय करना चाहिए। भगवत कृपा से सब देश बन्धुओं में यह सदि-च्छा निर्माण हो और अपना राष्ट्र सर्व सद्‌गुण सम्पन्न बन कर, अपना स्वतः सिद्ध जगद्‌गुरु पद प्राप्त करे और इस प्रकार महात्माजी की कीर्ति अक्षय बनी रहे।'

महात्मा गांधी के लेखों तथा भाषणों से

मुझे हिन्दू धर्म से पूरा संतोष है

"मुझे हिन्दू धर्म से पूरा संतोष है। वह धर्म इतना विशाल है कि उस में हर तरह के विश्वासों को आश्रय मिलता है। आर्य समाजी, सिख और ब्रह्मसमाजी भले ही अपने को हिन्दुओं से अलग समझना चाहें किन्तु मुझे तो इसमें शक नहीं कि आगे चलकर वे सब हिन्दू धर्म में मिल जायेंगे और उसी से शान्ती पायेंगे। दूसरी सब मनुष्य की बनायी संस्थाओं की तरह हिन्दू धर्म में भी कमियां और दोष हैं। सुधार के लिये कोई सेवक प्रयत्न करना चाहे, तो उसकें लिये यह बड़ा क्षेत्र है। किन्तु हिन्दू धर्म से अलग होने के लिए कोई कारण नहीं।"

—"मामूली तौर पर कहें तो हमें ज्यादा से ज्यादा जरूरत आज सच्ची धर्म भावना की है।"

(गुरुकुल १९२५)

धर्म रहित जीवन-बिना दूल्हे की बारात

अब मैं धर्म की बात पर आ गया। जहां धर्म नहीं वहां विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का अभाव होता है। धर्म रहित स्थिति में बिल्कुल शुष्कता होती है, शून्यता होती है। हम धर्म

की शिक्षा खो बैठे हैं। हमारी पढ़ाई में धर्म को जगह नहीं दी गयी। यह तो बिना दूल्हे की बारात जैसी बात है। धर्म को जाने बिना विद्यार्थी निर्दोष आनन्द नहीं ले सकते। यह आनन्द लेने के लिए शास्त्रों का पढ़ना, शास्त्रों का चिन्तन करना और विचार के अनुसार कार्य करना जरूरी है। ××

धर्म क्या है? धर्म की शिक्षा किस तरह हो? इन बातों का विचार इस जगह नहीं हो सकता। परन्तु इतनी सी व्यवहारिक सलाह अनुभव के आधार पर मैं देता हूं कि तुम राम चरित मानस और भगवद्गीता के भक्त बनों।

तुम्हारे पास 'मानस' रुपी रत्न आ पड़ा है। उसे ग्रहण कर लो। किन्तु इतना याद रखो कि इन दो ग्रंथों को पढ़ाई धर्म समझने के लिए करनी है। इन ग्रंथों के लिखने वाले ऋषियों का ध्येय इतिहास लिखना नहीं था बल्कि धर्म और नीति की शिक्षा देना था। करोड़ों आदमी इन ग्रंथों को पढ़ाते हैं और अपना जीवन पवित्र करते हैं।"

(१९१७ भागलपुर बिहार छात्र सम्मेलन)

हिन्दू धर्म सत्य धर्म है

"...मेरे लिए सत्य धर्म और हिन्दू धर्म पर्यायवाची शब्द हैं हिन्दू धर्म में अगर असत्य का कुछ अंश है तो मैं उसे धर्म नहीं मान सकता। अगर इसके लिए सारी हिन्दू जाति मेरा त्याग

कर दे और मुझे अकेला ही रहना पड़े तो भी मैं कहूंगा, मैं अकेल नहीं हूं, तुम अकेले हो क्योंकि मेरे साथ सत्य है और तुम्हारे साथ नहीं हैं।

'सत्यान्नास्ति परो धर्मा:' 'अहिंसा परमो धर्मः'
–गांधी सेवा संघ सम्मेलन हुबली २०/४/३७

हमारे धर्म की शिक्षा

आततायी का वध 'हिंसा' नहीं

"......मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिए अपनी जान दे दो; दूसरे को मारने के लिए हाथ तक न उठाओ। पर धर्म मुझे यह कहने के लिये भी छुट्टी देता है कि अगर ऐसा मौका आवे कि अपने आश्रित लोगों या जिम्मे के काम को छोड़कर भाग जाने या हमला करने वाले को मारने में किसी एक को पसन्द करना हो तो यह हर शख्श का कर्तव्य है कि वह मारते हुए वहीं मर जाय, अपनी जगह छोड़ कर भागे हरगिज नहीं। मुझे ऐसे हट्टे-कट्टे लोगों से मिलने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है जो सीधे सरल भाव से आकर मुझ से कहते हैं और जिसे मैंने बड़ी शरम के साथ सुना है, कि मुसलमान बद-माशों को हिन्दू अबलाओं पर बलात्कार करते हुए हमने अपनी आंखों देखा है। जिस समाज में जवांमर्द लोग रहते हों वहां बलात्कार की आंखों देखी गवाहियां देना प्रायः असंभव होना चाहिए। एक भोला-भाला पुजारी, जो अहिंसा का मतलब नहीं

जानता था, मुझसे खुशी-खुशी आकर कहता है साहब जब हुल-लड़ बाजों की भीड़ मंदिर में मूर्ति तोड़ने को घुसी तो मैं बड़ी होशियारी से छिपा रहा । मेरा मत है कि ऐसे लोग पुजारी होने के लायक बिलकुल नहीं हैं । उसे वहीं मर जाना चाहिए था । तब अपने खून से उसने मूर्ति को पवित्र कर दिया होता और अगर उसे यह हिम्मत न थी कि अपनी जगह बिना हाथ उठाये और मुंह से यह कहते हुए कि 'ईश्वर इस खूनी पर रहम कर'! मर मिटे तो उस हालत में उन मूर्ति तोड़ने वालों का संहार करना भी उसके लिए ठीक था । परन्तु अपने इस नश्वर शरीर को बचाने के लिए छिप रहना मनुष्योचित न था ।"

(यं. इं. हि. न. जी. ८/१/२५ पृष्ठ १७७)

मेरा हिन्दू धर्म

वैयक्तिक रूप से मेरे लिए केवल एक धर्म है और वह हिन्दू धर्म है ।

मैं अपने को हिन्दू कहलाने में गर्व का अनुभव करता हूं । किन्तु मैं रूढ़ि ग्रस्त कर्मकाण्ड-आबद्ध हिन्दू नहीं हूं । जहां तक मैं हिन्दू धर्म को समझ पाया हूं यह एक ठोस धर्म है । इसमें सहिष्णुता है और यह अन्य धर्मों के प्रति आदर रखता है ।

शान्ति निकेतन १७/९/१९२०

सनातनी हिन्दू

मैं अपने को सनातनी हिन्दू कहता हूं क्योंकि

(१) मैं वेद, उपनिषद, पुराण और जो कुछ भी हिन्दू धर्म शास्त्र नाम से जाना जाता है तथा अवतारों और पुनर्जन्म में मेरा विश्वास है।

(२) वेद विहित वर्णाश्रम धर्म में मेरा विश्वास है किन्तु इस के वर्तमान विकृत स्वरुप में नहीं।

(३) मैं प्रचलित अर्थों से भी विशाल व्यापक अर्थ में गोरक्षा में विश्वास करता हूँ।

(४) मूर्ति पूजा में अश्रद्धा नहीं है।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में मेरा विश्वास इनके प्रत्येक वाक्य को ईश्वरीय आदेश नहीं मानता। न इन सब का मैं स्वयं ज्ञाता हूं। किन्तु मेरा इतना ही दावा है कि इनकी सारभूत शिक्षाओं तथा इनमें निहित सत्य का मुझे ज्ञान है। अपने धर्म शास्त्रों की ऐसी कोई भी व्याख्या, वह कितने ही विद्वता पूर्ण क्यों न हो, जो मेरे नैतिक विश्वासों तथा तर्क बुद्धि के प्रतिकूल हो, मुझे मान्य नहीं है। यदि वर्तमान शंकराचार्य और शास्त्री इनको सही व्याख्या करने का दावा करें तो वह मुझे मान्य नहीं होगा। इसके विपरीत मैं मानता हूं कि इन शास्त्रों के अर्थों के संबंध में अनेक विवाद हैं। मैं इस लोकोक्ति का अनुयायी हूं कि

कोई शास्त्रों को उनके सही अर्थों में नहीं जान सकता जब तक उसने अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचर्य की पूर्णता प्राप्त न कर ली हो और जिसने संसार का त्याग न कर दिया हो । मैं गुरु परम्परा में विश्वास करता हूं मगर इस युग में शुचिता एवं ज्ञान में पारगत गुरु पाना कठिन है और लाखों लोगों को बिना गुरु रहना होगा । किन्तु अपने धर्म के सत्य ज्ञान से परिचित होने से किसी को निराश नहीं होना चाहिए । हिन्दू धर्म की मूलभूत मान्यतायें अन्य विशाल धर्मों के समान शाश्वत हैं और आसानी से समझ में आने वाली हैं । हर हिन्दू एक ही ईश्वर को मानता है, पुनर्जन्म मानता है, और मुक्ति या मोक्ष मानता है ।

गीता और रामचरित मानस

गीता और तुलसीदास के रामचरित मानस के गायन से मुझे जितना आनन्द मिलता है उतना अन्य किसी से नहीं । हिन्दू धर्म की इन्हीं दो पुस्तकों का मुझे ज्ञान है ऐसा कहा जा सकता है । मुझे अपने अन्तिम श्वासों की कल्पना करते समय गीता ही शान्ति दायिनी है । हिन्दुओं के सभी बड़े मठ मंदिरों में व्याप्त बुराइयों को मैं जानता हूं किन्तु उनके तमाम दोषों सहित मैं उनमें रुचि रखता हूं । उनके प्रति जैसी मेरी सुरुचि है वैसी अन्य के प्रति नहीं, मैं पूर्ण सुधार वादी हूं । मगर सुधार के जोश में हिन्दू धर्म की मूलभूत आवश्यक मान्यताओं की अवहेलना नहीं करता हूं । मैं ने कहा है कि मूर्ति पूजा में अश्रद्धा

नहीं है। मूर्ति दर्शन से मेरे हृदय में पूज्य भाव नहीं पैदा होते किन्तु मेरा विचार है कि मूर्ति पूजा मानव स्वभाव का एक अंग हैं। हम मूर्त रुप उपासना के भूखे रहते हैं। अन्य स्थान की अपेक्षा चर्च में ही शान्ति क्यों मिलती है? मूर्तियां पूजा का उपकरण हैं, कोई भी हिन्दू मूर्ति को ईश्वर नहीं मानता, मेरे विचार से मूर्ति पूजा गुनाह नहीं है। अभी तक जो कुछ कहा गया उससे यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म नकारात्मक नहीं हैं। इसमें दुनिया भर के पैगम्बरों की पूजा के लिए स्थान है। सामान्य अर्थों में यह मिशनरी धर्म नहीं है। निःसंदेह इसने अनेक जातियों को अपने में मिलाने का काम किया है मगर आत्मसात् की यह प्रक्रिया बड़ी सूक्ष्म और सतत विकासमान प्रवाह का परिणाम थी। हिन्दू धर्म प्रत्येक को अपने विश्वास के अनुसार ईश्वरोपासना का उपदेश करता है और इसीलिए अनेक मत सम्प्रदायों के साथ इसका शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व है।

हिन्दूत्व के संबंध में उपरोक्त विचार रखने के साथ मैं 'छुआ-छूत' के साथ कभी समझौता नहीं कर सका। मेरे ख्याल से यह असंगत है।××× [यंग इं.६/१०/२१]

हिन्दुस्तान का उद्धार इस बात पर अवलम्बित है कि हिन्दू अपने धर्म की रक्षा किस प्रकार करते हैं।

"हिन्दुस्तान का उद्धार मुसलमानों पर उतना अवलम्बित नहीं, ईसाइयों पर उतना अवलम्बित नहीं जितना इस बात पर

अवलम्बित है कि हिन्दू अपने धर्म की रक्षा किस प्रकार करते हैं क्योंकि मुसलमानों का काशी-विश्वनाथ यहां नहीं, मक्का में है, ईसाइयों का जेरुसलेम में है। पर आप तो हिन्दुस्तान में रह कर ही मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। यह युधिष्ठिर की भूमि है: यह राम चन्द्र की भूमि हैं। ऋषि मुनियों ने हमसे कह रखा है कि यह कर्म भूमि है, भोग भूमि नहीं। इस भूमि के निवासियों से कहता हूं कि हिन्दू धर्म आज तराजू पर चढ़ा हुआ है और संसार के तमाम धर्मों के साथ उसकी तुलना हो रही है, और जो बात बुद्धि के बाहर होगी, दया धर्म के बाहर होगी उसका समावेश यदि हिन्दू धर्म में होगा तो उसका नाश निश्चित समझ रखना। दया धर्म का मुझे मान है और उसी के कारण मैं देख रहा हूं कि हिन्दू धर्म के नाम पर कितना पाखण्ड, कितना अज्ञान, फैल रहा है। इस पाखण्ड और अज्ञान के खिलाफ यदि जरूरत पड़े तो अकेला लड़ूंगा, अकेला रह कर तपश्चर्या करुंगा और उसका नाम जपते मरुंगा। शायद ऐसा भी हो जाय कि मैं पागल हो जाऊं और कहूं कि मैंने अस्पृश्यता सम्बन्धी विचारों में भूल की है और मैं कहूं कि अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म का पाप कहकर मैंने पाप किया था तो आप मानना कि मैं डर गया हूं, सामना नहीं कर सका और दिक होकर मैं अपने विचार बदल रहा हूं। उस दशा में आप मानना कि मैं मुर्च्छित अवस्था में ऐसी बात बक रहा हूं।"

[हि० न० जी० १५/१/,२५]

हिन्दू धर्म और ईसाई मत, तुलनात्मक विचार

महात्मा गांधी के एक अमरीकी मित्र ने लिखा कि "आपने ईसाई और हिन्दू धर्मों का गहन अध्ययन किया है और इस गहन अध्यन के आधार पर अपने हिन्दू होने की घोषणा की है तो कृपा कर यह बतायें कि आपने हिन्दू धर्म क्यों वरण किया ? दोनों की शिक्षाओं का अपना तुलनात्मक विचार लिखें आदि ।

उत्तर में महात्मा जी ने लिखा— इंगलैंड और अमरीका की कई मिश्नरी सभाओं में मैंने यह कहने का साहस किया कि अगर ईसाई मिश्नरी भारतीयों को ईसामसीह का उपदेश न देकर स्वतः का जीवन ईसा के दस उपदेशों के अनुसार बना लेते तो इससे लोग लाभ उठाते । दूसरों को धर्मोपदेश देने और धर्मान्तरण कराने में मेरा विश्वास नहीं है । धर्माचरण से इसका प्रसार स्वतः होता है ।

सिवा अपने जीवन में आचरित करने के अन्य प्रकार से हिन्दुत्व की व्याख्या करने में अपने को असमर्थ पाता हूं । संक्षेप में मैं यही कह सकता हूं कि मैं हिन्दु क्यों हूं ।

परम्परा के प्रभाव में विश्वास रखने के कारण एक हिन्दू परिवार में मेरा जन्म हुआ अतः मैं हिन्दू हूं । यदि हिन्दू धर्म में कोई बिचार मेरे नैतिक विचारों या मेरे अध्यात्मक विकास

में बाधक होता तो मैं उसे मानने से इनकार कर देता। परीक्षण कर मैंने पाया है कि संसार के सब धर्मों में हिन्दू धर्म सर्वाधिक सहनशील है। किसी एक पंथ सम्प्रदाय के घेरे में प्रतिबद्ध न होने के कारण इस से मुझे विशेष प्रेम है। इस से उनके अनुयायियों को आत्म अभिव्यक्ति की अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। मत सम्प्रदाय की सीमाओं का बन्धन न होने के कारण हिन्दू न केवल सभी धर्मों को समान आदर के भाव से देखते हैं वरन् सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपने में आत्मसात् कर सकते हैं। अहिंसा का सिद्धान्त सभी धर्मों में है मगर हिन्दू धर्म में इसका सबसे अधिक विकास हुआ है और आचरण में लाया गया है। जैन तथा बौद्ध मतों को मैं हिन्दू धर्म से भिन्न नहीं मानता। हिन्दूधर्म केवल मानव मात्र की एकता में विश्वास नहीं करता वरन् जीवमात्र की एकता में विश्वास करता है। मेरी राय में मानवता के विकास में 'गोपूजा' उसकी अदभुत देना है। प्राणिमात्र से प्रेम रखने की यह प्रत्यक्ष निशानी है। पुनर्जन्म में विश्वास का यह परिणाम है। वर्णाश्रम व्यवस्था का आविष्कार सत्यान्वेषण का सुफल है। आदि

[यंगइं० २०/१०/२७]

सनातनी हिन्दू क्यों हूं ?

अक्सर यह पूछा जाता है कि मैं अपने को कट्टर सनातनी हिन्दू क्यों कहता हूं और अपने को वैष्णव क्यों मानता हूं।

मेरा ख्याल है कि मुझे इन सवालों का जवाब देना चाहिये। मेरे विश्वास के अनुसार 'हिन्दू' वह है जो हिन्दू परिवार में जन्मा हैं, वेदों उपनिषदों और पराणों को पवित्र पुस्तक के रूप में स्वीकार करता है, जिसे सत्य अहिंसा आदि पांच यमों पर विश्वास है और जो अपनी श्रेष्ठतम क्षमता से इनका अभ्यास करता है। जो आत्मन् और परमात्मन के अस्तित्व में विश्वास रखता है और इससे भी आगे यह विश्वास करता है कि आत्मा का कभी जन्म और मरण नहीं होता, प्रत्युत शरीर में अवतरित हो वह एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है और वह मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ है; जो विश्वास करता है कि मानव प्रयत्नों का उच्चतम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और जो वर्णाश्रम तथा गोरक्षा में विश्वास रखता है। जो भी व्यक्ति इन बातों में विश्वास रखने के साथ-साथ वैष्णव सम्प्रदायानुयायी परिवार में उत्पन्न हुआ है और जिसने वैष्णव मार्ग छोड़ नहीं दिया है, जो नरसी मेहता के भजन 'वैष्णव जन' में वर्णित गुणों को कुछ मात्रा में धारण करता है और इन गुणों को पूर्णता तक बढ़ाने के लिए प्रयत्न करता है, वह वैष्णव हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे अन्दर बड़े पैमाने पर मेरे द्वारा वर्णित चारित्रिक विशेषताएं हैं और मैं इन्हें दृढ़ करने के लिए यत्न कर रहा हूं। अतएव मैं अपने को सम्पूर्ण दृढ़ता, किन्तु नम्रता के साथ, कट्टर सनातनी हिन्दू और वैष्णव कहने में नहीं हिचकता। .... हिन्दू धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त मोक्ष है। मैं सदैव उसके लिए प्रयत्नशील हूं। मेरी समस्त प्रवृत्तियाँ मोक्ष के लिए हैं। मुझे आत्मा के अस्तित्व और

इसकी अनश्वरता पर इतना ही विश्वास है जितना मैं शरीर के अस्तित्व और इसकी क्षण जीविता के विषय में आश्वस्त हूं।

इन्ही कारणों से मैं प्रसन्नतापूर्वक अपने को कट्टर सनातनी हिन्दू घोषित करता हूं।

हिन्दू धर्म समावेशक, व्यापक तथा सतत वर्द्धमान है

—ईश्वरीय प्रकाश किसी एक ही राष्ट्र या जाति की सम्पत्ति नहीं है। यदि मुझे हिन्दू–धर्म का कुछ भी ज्ञान है तो वह समावेशक, व्यापक, सतत-वर्धमान और परिस्थिति के अनुरूप नवीन रूप धारण करने वाला है। उसमें कल्पना करने और तर्क करने के लिए पूरा-पूरा अवकाश है। मैंने कुरान और पैगम्बर साहब के प्रति आदर भाव उत्पन्न करने में हिन्दुओं के नजदीक तनिक भी दिक्कत महसूस नहीं की, पर हां, मुसलमानों के अन्दर वेद के और अवतारों के प्रति वही आदर-भाव उत्पन्न करने में मैंने अवश्य दिक्कत महसूस की है।...भगवद्गीता और तुलसीदास की रामायण से मुझे अजहद शान्ति मिली है। मैं खुलकर स्वीकार करता हूं कि कुरान, बाइबिल और संसार के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा अति आदर भाव होते हुए भी मेरे हृदय पर इनका उतना प्रभाव नहीं होता, जितना श्री कृष्ण की गीता और तुलसीदास की रामायण का होता है।

हि० न० जी २८ ९ २४

मेरा ख्याल है कि मुझे इन सवालों का जवाब देना चाहिये। मेरे विश्वास के अनुसार 'हिन्दू' वह है जो हिन्दू परिवार में जन्मा हैं, वेदों उपनिषदों और पराणों को पवित्र पुस्तक के रूप में स्वीकार करता है, जिसे सत्य अहिंसा आदि पांच यमों पर विश्वास है और जो अपनी श्रेष्ठतम क्षमता से इनका अभ्यास करता है। जो आत्मन् और परमात्मन के अस्तित्व में विश्वास रखता है और इससे भी आगे यह विश्वास करता है कि आत्मा का कभी जन्म और मरण नहीं होता, प्रत्युत शरीर में अवतरित हो वह एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है और वह मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ है; जो विश्वास करता है कि मानव प्रयत्नों का उच्चतम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है और जो वर्णाश्रम तथा गोरक्षा में विश्वास रखता है। जो भी व्यक्ति इन बातों में विश्वास रखने के साथ-साथ वैष्णव सम्प्रदायानुयायी परिवार में उत्पन्न हुआ है और जिसने वैष्णव मार्ग छोड़ नहीं दिया है, जो नरसी मेहता के भजन 'वैष्णव जन' में वर्णित गुणों को कुछ मात्रा में धारण करता है और इन गुणों को पूर्णता तक बढ़ाने के लिए प्रयत्न करता है, वह वैष्णव हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे अन्दर बड़े पैमाने पर मेरे द्वारा वर्णित चारित्रिक विशेषताएं हैं और मैं इन्हें दृढ़ करने के लिए यत्न कर रहा हूं। अतएव मैं अपने को सम्पूर्ण दृढ़ता, किन्तु नम्रता के साथ, कट्टर सनातनी हिन्दू और वैष्णव कहने में नहीं हिचकता। .... हिन्दू धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त मोक्ष है। मैं सदैव उसके लिए प्रयत्नशील हूं। मेरी समस्त प्रवृत्तियाँ मोक्ष के लिए हैं। मुझे आत्मा के अस्तित्व और

इसकी अनश्वरता पर इतना ही विश्वास है जितना मैं शरीर के अस्तित्व और इसकी क्षण जीविता के विषय में आश्वस्त हूं।

इन्हीं कारणों से मैं प्रसन्नतापूर्वक अपने को कट्टर सनातनी हिन्दू घोषित करता हूं।

हिन्दू धर्म समावेशक, व्यापक तथा सतत वर्द्धमान है

—ईश्वरीय प्रकाश किसी एक ही राष्ट्र या जाति की सम्पत्ति नहीं है। यदि मुझे हिन्दू–धर्म का कुछ भी ज्ञान है तो वह समावेशक, व्यापक, सतत-वर्धमान और परिस्थिति के अनुरूप नवीन रूप धारण करने वाला है। उसमें कल्पना करने और तर्क करने के लिए पूरा-पूरा अवकाश है। मैंने कुरान और पैगम्बर साहब के प्रति आदर भाव उत्पन्न करने में हिन्दुओं के नजदीक तनिक भी दिक्कत महसूस नहीं की, पर हां, मुसलमानों के अन्दर वेद के और अवतारों के प्रति वही आदर-भाव उत्पन्न करने में मैंने अवश्य दिक्कत महसूस की है।...भगवद्गीता और तुलसीदास की रामायण से मुझे अजहद शान्ति मिली है। मैं खुलकर स्वीकार करता हूं कि कुरान, बाइबिल और संसार के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा अति आदर भाव होते हुए भी मेरे हृदय पर इनका उतना प्रभाव नहीं होता, जितना श्री कृष्ण की गीता और तुलसीदास की रामायण का होता है।

हि० न० जी २८ ६ २४

हिन्दू धर्म की विशेषता है विविधता में एकता

—हम सब धर्मों को मृतवत् एक सतह पर लाना नहीं चाहते, बल्कि विविधता में एकता चाहते हैं। पूर्व-परम्परा तथा आनुवंशिक संस्कार, जलवायु और दूसरी आस-पास की बातों के प्रभाव को उन्मूलन करने का प्रयत्न केवल असफल ही नहीं, अधर्म भी होगा। आत्मा सब धर्मों की एक है—हां, वह विभिन्न आकृतियों में मूर्तिमान होती है। और यह बात कालान्त तक बनी रहेगी। इसलिए जो बुद्धिमान हैं, समझदार हैं, वे तो ऊपरी कलेवर पर ध्यान न देकर विभिन्न आकृतियों में उसी एक आत्मा का दर्शन करेंगे। हिन्दुओं के लिए यह आशा करना कि इस्लाम, ईसाई-धर्म और पारसी धर्म को हिन्दुस्तान से निकाल दिया जा सकेगा एक निरर्थक स्वप्न है। इसी तरह मुसलमानों को भी यह आशा करना कि किसी दिन सिर्फ उनके कल्पनागत इस्लाम का राज्य सारी दुनिया में हो जायगा, कोरा स्वप्न है। पर अगर इस्लाम के लिए एक ही खुदा को और उसके पैगम्बरों की अनन्त परम्परा को मानना काफी होता हो तो हम सब मुसलमान हैं। इसी तरह हम सब हिन्दू और ईसाई भी हैं। सत्य किसी एक ही धर्म-ग्रन्थ की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है।

[हि० न० जी० २८/६/२४]

हिन्दू धर्म का नवनीत

सनातनी भाई शायद यह मानते हैं कि मैं हिन्दू धर्म के हृदय पर आघात करना चाहता हूं। स्वयं मैं अपने को सनातनी गिनता हूं। मैं जानता हूं कि मेरा दावा बहुत थोड़े भाई बहिन स्वीकार करते होंगे। किन्तु मेरा यह दावा है और रहेगा। मैं तो कई बार कह चुका हूं कि आज नहीं तो मेरी मृत्यु के बाद समाज मेरी बात को अवश्य स्वीकार करेगा कि गांधी सनातनी हिन्दू था। सनातनी के माने हैं प्राचीन। मेरे भाव प्राचीन हैं– अर्थात् ये भाव मुझे प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थों में दिखाई देते हैं और मैं इन्हें जीवन रुप बनाने की कोशिश कर रहा हूं। इसी कारण मैं मानता हूं कि मेरा सनातनी होने का दावा बिल्कुल ठीक है। मैं शास्त्रों की कथा गढ़कर कहने वालों को सनातनी नहीं कहता। सनातनी वही है जिस की रग-रग में हिन्दू धर्म व्याप्त हो। इस हिन्दू धर्म को, शंकर भगवान (जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य) ने एक ही वाक्य में कह दिया है—"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या"। दूसरे ऋषि ने कहा "सत्य से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं।" और तीसरे ने कहा है "हिन्दू धर्म का अर्थ है "अहिंसा"। इन तीन में से आप चाहे जिस सूत्र को ले लीजिये, इसमें आप को हिन्दू धर्म का रहस्य मिल जायगा। ये तीन सूत्र क्या हैं

मानो हिन्दू धर्म शास्त्र को दुह कर निकाला गया नवनीत है।

[हिन्दी नवजीवन १६/२/१६२५]

हिन्दू धर्म की विशेषता इसकी सर्व व्यापकता और सर्व संग्राहकता है।

मेरी राय में हिन्दू धर्म की विशेषता इसकी सर्व व्यापकता और संग्राहकता है। महाभारत के कर्ता ने अपनी महान सृष्टि के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह हिन्दू धर्म पर भी उतना ही घटता है। दूसरे धर्मों में जो काम की बातें मिलती हैं, वे सर्वदा हिन्दू धर्म में पाई जाती हैं और जो कुछ इसमें नहीं है उसे स... हीन या अनावश्यक समझना चाहिये।

[हि० न० जी० १७/६/'२५]

हिन्दू धर्म एक जीवित धर्म है

...हिन्दू धर्म एक जीवित धर्म है। इसमें भरती खोट आती ही रहती है। वह संसार के नियमों का ही अनुसरण करता है। मूल से तो वह एक ही है लेकिन वृक्ष के समान वह विविध प्रकार का है। इस पर ऋतुओं का असर होता है, इस का बसंत होता है और पतझड़ भी। इसकी शरद्ऋतु होती है और ग्रीष्म ऋतु भी। वह वर्षा से भी वंचित नहीं रहता। इसके लिए शास्त्र हैं और नहीं भी। इसका आधार एक ही पुस्तक पर नहीं है। गीता सर्व मान्य है, लेकिन वह केवल मार्ग दर्शक

है। रुढ़ियों पर इसका बहुत कम असर होता है। हिन्दू धर्म गंगा के प्रवाह के समान है। वह मूल में शुद्ध है। मार्ग में इस पर मैल चढ़ता है। इसके बावजूद जिस प्रकार गंगा की प्रवृत्ति अन्त में पोषक है इसी प्रकार हिन्दू धर्म भी है। वह प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय स्वरूप ग्रहण करता है फिर भी इसमें एकता होती है। रुढ़ियां धर्म नहीं हैं। रुढ़ियों में परिवर्तन होगा लेकिन धर्म-सूत्र यथावत बने रहेंगे।

हिन्दू धर्मावलम्बी की तपश्चर्या पर ही हिन्दू धर्म की शुद्धता आधारित है। जब हिन्दू धर्म पर संकट आता है हिन्दू धर्माव-लम्बी तपश्चर्या करता है, बुराई के कारण खोजता है और उसका उपाय करता है। शास्त्रों में वृद्धि होती रहती है। वेद, उपनिषद, स्मृतियां, इतिहास आदि एक साथ एक ही समय में उत्पन्न नहीं हुए हैं। प्रसंग आने पर ही उन ग्रंथों की रचना हुई है इसलिए उनमें विरोधा भास भी मिलता है। वे ग्रंथ शाश्वत सत्य नहीं बतलाते। वे अपने-अपने समय शाश्वत सत्य का किस प्रकार अमल किया गया है, यही बतलाते है। किसी समय जिस प्रकार व्यवहार किया गया था वैसा ही अन्य समय में भी करें तो निराशा के कूप में गिरना होगा। एक समय हमारे यहां पशु यज्ञ होता था, इसलिए क्या आज भी करेंगे ? एक समय हमलोग मांसा-हार करते थे इसलिए क्या आज भी करेंगे ? एक समय चोर के हाथ पैर काटने का रिवाज था आज भी काटेंगे ? एक समय हमारे यहां एक स्त्री अनेक पति करती थी, क्या आज भी करेगी ? एक समय हम लोग बाल कन्या का दान करते थे, तो क्या आज

भी वही करेंगे ? एक समय हम लोगों ने प्रजा के कुछ मनुष्यों को तिरस्कृत माना था, इसलिए क्या आज भी उन्हें तिरस्कृत मानेंगे ?

हिन्दू धर्म जड़ बनने से साफ इन्कार करता है। ज्ञान अनन्त है। सत्य की मर्यादा की खोज किसी ने नहीं पाई। आत्मा की नई नई खोज होती रहती है और होती रहेगी। हम लोग अनुभव के पाठ पढ़ते हुए अनेक प्रकार के परिवर्तन करते रहेंगे...। वेद सत्य हैं, अनादि हैं, लेकिन इन्हें सर्वस्व में कौन जान सका है ? आज वेद के नाम से जो पहचाना जाता है, वह तो इसका करोड़वां भाग भी नहीं है। जो हम लोगों के पास है, इसका अर्थ भी सम्पूर्णतया कौन जानता है ?

इतना बड़ा जंजाल होने के कारण ही ऋषियों ने हमें एक बहुत बड़ी बात सिखाई है– यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे, ब्रह्माण्ड का पृथक्करण असंभव है, अपना पृथक्करण कर देखना शक्य है। स्वयं को पहचानते ही संसार पहचान में आ जाता है। लेकिन अपने को पहचानने के लिये प्रयत्न करना आवश्यक है। प्रयत्न भी निर्मल होना चाहिये। निर्मल हृदय के बिना प्रयत्न का निर्मल होना असंभव है। यम-नियमादि का पालन कठिन है। ईश्वर की कृपा बिना श्रद्धा और भक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इसी लिए तुलसी दास ने राम नाम की महिमा गाई है और भागवद्कार ने द्वादश मन्त्र सिखाया है (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)। जो समाहित हृदय से यह जप कर सकता है,

वही सनातनी हिन्दू है, बाकी सब तो अखा (अखा भगत) की भाषा में अंधेरा कुआं है।

...खाद्याखाद्य में हिन्दू धर्म की परिसीमा नहीं हो जाती। इससे करोड़ गुनी आवश्यक वस्तु अन्तराचरण है; सत्य अहिंसादि का सूक्ष्म पालन है...।

आज हिन्दू धर्म की और अन्य धर्मों की परीक्षा हो रही है सनातन सत्य एक ही है; ईश्वर एक ही है।... सनातनी माने जाने वाले बहुत से लोग भटक रहे हैं। इनमें कौन जानता है किसे स्वीकार किया जायगा। राम नाम लेने वाले अनेक लोग रह जायेंगे और चुपचाप राम का काम करने वाले बिरल लोग विजयमाल पहन लेंगे।

[हि० न० जी० ११/२/१९२६]

हिन्दू धर्म ने मुझे भय से बचा लिया

"...×× वर्णाश्रम धर्म संसार को हिन्दू धर्म की अपूर्व भेंट है। हिन्दू धर्म ने हमें भय से बचा लिया है। अगर हिन्दू धर्म मेरे सहारे को नहीं आता तो मेरे लिए आत्म-हत्या के सिवाय और कोई चारा नहीं होता।

मैं हिन्दू इसलिए हूं कि हिन्दू धर्म ही वह चीज है जो संसार को रहने लायक बनाता है।"

हिन्दू धर्म किसी का विरोधी नहीं

"हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा सत्य और अहिंसा पर निर्भर है और इस कारण हिन्दू धर्म किसी धर्म का विरोधी हो नहीं सकता है। हिन्दू धर्म की नित्य प्रदक्षिणा यह होनी चाहिए कि जगत् के सब प्रतिष्ठित धर्मों की उन्नति हो और उसके द्वारा सारे संसार की।"

[हि० से० २५/३/'२९ श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर का उदघाटन]

"मेरी दृष्टि में ब्राह्मण धर्म का दूसरा नाम हिन्दू धर्म है। ब्राह्मण धर्म का अर्थ है 'ब्रह्म ज्ञान', इसलिए ब्राह्मण धर्म का अर्थ है जिसके द्वारा मनुष्य को ईश्वर दर्शन अथवा आत्म दर्शन होता है। यदि मेरा यह आशय न होता तो मैं हिन्दू धर्म का आश्रयी कभी न रहता।"

मैं तुलसी और राम चन्द्र का भक्त हूं

मैं हिन्दू हूं और चाहता हूं कि गीता का एक श्लोक पढ़ते-पढ़ते मर जाऊं और मोक्ष प्राप्त करुं। मैं स्वर्ग नहीं चाहता न विमान चाहता हूं। पृथ्वी पर चलने से भी अभिमान होता है। विमान पर चढ़ने से जाने कितना अभिमान होगा। मैं तुलसी और रामचन्द्र का भक्त हूं और शुद्ध सनातनी होने का दावा करता हूं।

[रावलपिण्डी १०/१२/१९२४]

हिन्दू सभी धर्मों के साथ मेल-जोल से रहता हैं

यह कोई मिश्नरी धर्म मत का प्रचार करने वाला धर्म नहीं है। हां, इसमें कितनी ही भिन्न जातियों का समावेश हुआ है, परन्तु इनकी यह तद्रुपता विकासात्मक और अत्यन्त सूक्ष्म है। हिन्दू धर्म तो हर एक मनुष्य से यह कहता है कि तुम अपने विश्वास या धर्म के अनुसार ईश्वर का भजन पूजन करो और इस प्रकार वह दूसरे समस्त धर्मों के साथ मेल-जोल से रहता है।

हिन्दू धर्म संकुचित संप्रदाय नहीं है

—मेरी कल्पना का हिन्दू धर्म केवल एक संकुचित संप्रदाय नहीं, वह एक महान और सतत विकास का प्रतीक और काल की तरह ही सनातन है। इसमें जरथुस्त्र, मूसा, ईसा, मुहम्मद, नानक और ऐसे अन्य कई धर्म संस्थापकों के उपदेशों का समावेश हो जाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार है—

विद्वदभिः सेवितः सदभिर्नित्यम द्वेषरागिभिः।
हृदय नाभ्युनज्ञातो यो धर्मस्तं निवोधत् ॥

अर्थात् जिस धर्म को रोग-द्वेष विहीन ज्ञानी सन्तों ने अपनाया है और जिसे हमारा हृदय और बुद्धि भी स्वीकार करती है वही सद्धर्भ है।

अगर हिन्दू-धर्म ऐसा न हो तो वह बच नहीं सकता।

—हिन्दू धर्म महा सागर है। उसमें अनेक रत्न भरे हैं। जितने गहरे पानी में जाओ, उतने अधिक रत्न मिलते हैं।

—मेरी राय में 'ईशोपनिषद्' के पहले श्लोक में हिन्दू धर्म की अध्यात्मिकता का सार समाया हुआ है।

ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किंच जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मागृधः कस्यस्विस्द्धनम् ॥

इस श्लोक का आशय यह है कि दुनिया में जो कुछ मौजूद है, इसमें भगवान समाया हुआ है और वह सब भगवान में समाया है। इसलिए कोई व्यक्ति किसी चीज पर अधिकार नहीं जता सकता। इसे अपना शरीर, मस्तिष्क और अपने पास की सभी चीज कण-कण में व्याप्त उस भगवान को भेंट कर देनी चाहिए और उसकी कृपा से जो कुछ मिल जाए, इसी को काम में लाना चाहिए। इसका सार यह है कि हम किसी आदमी से इसका धन न छीनें—भले ही वह धन इसका प्राण, प्रतिष्ठा या धर्म के रुप में क्यों न हो।... इस सत्य को मानने वाला और उसके अनुसार चलने वाला बिल्कुल निर्भय बन जाता है और पूरी शान्ति से रहता है...मुझे लगता है यह मंत्र समाजवादी और साम्यवादी तत्वचिंतक तथा अर्थशास्त्री सब की आकांक्षा को तृप्त करता है।

हिन्दू धर्म में सब धर्मों का सार मिलता है

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों को उद्बोधन)

मै तो दक्षिण अफ्रीका से दावा करता आया हूं, कि मै सनातनी हिन्दू हूं। हिन्दू शब्द का वास्तविक मूल क्या है, यह बहुत कम लोग जानते हैं। ×× धर्म के अनेक अभ्यासी कहते हैं कि हिन्दू धर्म क्यों कहते हो। इसे आर्य धर्म या सनातन धर्म कहो। हिन्दू धर्म की विशेषता इसकी सहिष्णुता और जिसके सम्पर्क में आये इसकी अच्छी चीजों को पचा लेने की शक्ति रही है।...

...मेरे हिन्दू धर्म में सब धर्भ आ जाते हैं। हिन्दू धर्म में सब धर्मों का सार मिलता है। अगर हिन्दू धर्म सब को पचा जाने का काम न करता तो वह इतना ऊंचा न उठ सकता।...

...मेरी रग-रग में हिन्दू धर्म समाया हुआ है। मैं धर्म को जिस तरह समझता हूं इसी तरह इसकी और हिन्दुस्तान की सेवा पूरी ताकत से कर रहा हूं।... [२८/९/१९४७]

हिन्दू धर्म की मुख्य विशेषताएं

एक अमरीकी महिला के प्रश्नों के उत्तर में गांधी जी ने कहा हिन्दू धर्म की सच्ची महत्ता यह है कि वह मानता है कि जीवमात्र (केवल मनुष्य नहीं, सचेतन प्राणी मात्र) एक है, इनमें एक सर्व व्यापी मूल से उत्पन्न होने वाले जीवमात्र का

समावेश हो जाता है— फिर उस मूल को अल्लाह कहें, गाड कहें या परमात्मा कहें। हिन्दू धर्म में 'विष्णु-सहस्र-नाम' नामक एक छोटा सा स्त्रोत है, इसका अर्थ ईश्वर के सहस्र नाम इतना ही नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर के नाम केवल इतने हैं, किन्तु इसका अर्थ यह है कि तुम उसके जितने नाम रख सको उतने उसके नाम हैं। तुम उसे जितना नाम देना चाहते हो, दे दो, केवल जिसका तुम नाम लेते हो वह ईश्वर एक मेवाऽद्वितीय होना चाहिये। इसका अर्थ यह है कि वह अनाम भी है।

यह जीवमात्र की एकता हिन्दू धर्म की विशेषता है। हिन्दू धर्म कहता है कि मुक्ति केवल मनुष्यों को ही नहीं मिल सकती, वह ईश्वर के बनाये हुए सभी प्राणियों को मिल सकती है। सम्भव है कि मानव देह के अतिरिक्त दूसरी देह द्वारा मोक्ष न प्राप्त हो सकता हो, पर इससे मनुष्य सृष्टि का स्वामी नहीं बन जाता। इससे तो ईश्वर की सृष्टि का सेवक बनता है। अब जबकि हम मानव बन्धुत्व की बात करते हैं, तब यहां हम अटक जाते हैं और हमें लगता है कि दूसरे सब जीव मनुष्य के उपयोग के लिए बनाये गये हैं। पर हिन्दू धर्म ने इस उपभोग को त्याज्य माना है। जीवमात्र के साथ इस एकता का सम्पादन के लिए मनुष्य जितना भी त्याग करे, कम है। यह आदर्श इतना विशाल है कि इससे मनुष्य की आवश्यकताओं पर अंकुश रखा जा सकता है आप देखेंगी कि यह वस्तु आधुनिक सभ्यता से उलटी है। यह सभ्यता कहती है कि अपनी आवश्यकतायें बढ़ाओ। जो

ऐसा विश्वास रखता है वह मानता है कि आवश्यकतायें बढ़ाने से ज्ञान बढ़ता है और हम उस ज्ञान द्वारा अनन्त ईश्वर को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। इसके विपरीत हिन्दू धर्म भोग विलास और आवश्यकतायें बढ़ाने को त्याज्य समझता है। क्योंकि यह ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक आत्म विकास में बाधक रूप हो जाता है।

- अहिंसा के संदेश से परिपूर्ण हिन्दू धर्म मेरी दृष्टि में सबसे सुन्दर, सबसे बड़ा, सबसे महिमामय धर्म है, जैसे मेरी दृष्टि में मेरी धर्म पत्नी सबसे सुन्दर रमणी है।

- मुझे हिन्दू ग्रन्थों में आत्मा की प्रत्येक आवश्यकता पूरी करने का सामान मिल जाता है।

- जो प्रयत्न करता उसका कभी नाश नहीं होता, इस बचन पर अटल श्रद्धा है।

- धर्म रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म रहित राज सत्ता राक्षसी है।

महात्मा जी के लेखों तथा भाषणों से विचार विन्दु

- हिन्दू धर्म जीवित धर्म है।
- हिन्दू धर्म गंगा का प्रवाह है।
- हिन्दू धर्म वह चीज है जो संसार को रहने योग्य बनाती है।
- हिन्दू धर्म के सिवा मेरी दूसरी वृत्ति नहीं।
- मेरे (हिन्दू) धर्म की भौगोलिक सीमायें नहीं है।
- मेरी दृष्टि में हिन्दू धर्म सत्य के सबसे ज्यादा निकट हैं।
- मैं हिन्दू धर्म में चुस्त रह कर भी दूसरे धर्मों की पूजा कर सकता हूं।
- हिन्दू धर्म महासागर है, उसमें अनेक रत्न भरे हैं। मैं हिन्दू महासागर की एक बूंद मात्र हूं। महासागर कभी गन्दा नहीं होता।
- धर्महीन जीवन का दूसरा नाम सिद्धान्तहीन जीवन है।
- जीव मात्र पर दया हिन्दू धर्म की विशेषता है।
- गाय के लिये प्राण देना हमारी अन्तिम तपश्चर्या होगी।
- हिन्दू धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त मोक्ष है।
- हिन्दू धर्म की विशेषता उसकी सर्व–व्यापकता और सर्व–संग्राहकता है।

- हिन्दू धर्म में उदारता का पार नहीं है।
- हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अर्थ का दिन प्रतिदिन विकास होता रहा है।
- जीव मात्र की एकता हिन्दू धर्म की विशेषता है।
- हिन्दू धर्म एकेश्वरवादी है।
- विनय के सामने झुकना धर्म है ; जोर जबर-दस्ती के सामने झुकना अधर्म है ।
- हिन्दू धर्म में तप कदम-कदम पर है, यदि तप के साथ श्रद्धा, भक्ति, नम्रता न हो तो वह एक मिथ्या कष्ट है। वह दंभ भी हो सकता है।
- हिन्दू धर्म किसी धर्म की अवहेलना नहीं करता।
- धर्म वह है जो धारण करता है।
- सनातन धर्म ऐसा सदाचार है जिसका लोग पालन कर सकें।
- धर्म परिवर्तन और सेवा दोनों का साथ भली प्रकार नहीं मिलता।
- भारतवर्ष प्रधानतः धर्म भूमि है। उसे धर्म भूमि बनाये रखना भारतवासियों का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

- महाभारत और रामायण दो ऐसे ग्रंथ है जिनको करोड़ों हिन्दू जानते हैं और अपने मार्ग दर्शन के लिये पढ़ते भी है।.........मैं तो कहता हूं कि मेरे विचार वास्तव में गीता, रामायण, महाभारत और उपनिषदों के अध्ययन का परिणाम हैं।

- मैं अपने को हिन्दू कहने में गौरव मानता हूं। क्योंकि यह शब्द इतना विशाल है, कि पृथ्वी के चारों कोनों के पैगम्बरों के प्रति यह केवल सहिष्णुता ही नहीं रखता वरन् वह उन्हें आत्मसात् कर सकता है।

- हिन्दू धर्म के प्रति मेरी जो भावना है इसका वर्णन मैं अपनी धर्म पत्नी के प्रति मेरी भावना से बढ़कर नहीं कर सकता। वह मेरे हृदय पर जितना अधिकार कर सकती है इतना दुनिया की कोई स्त्री नहीं कर सकती, इसका कारण यह नहीं कि वह निर्दोष है। मैं कह सकता हूं कि जितने दोष मैंने उसमें पाये हैं उससे भी अधिक दोष उसमें होंगे। लेकिन हृदय में एक अटूट बंधन की भावना है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म के लिए और उसके विषय में तमाम दोषों और कमियों के होते हुए भी मेरे हृदय में प्रेम की भावना है।

- हिन्दू धर्म तो कई युगों के विकास का फल है।
- हिन्दू धर्म संकुचित धर्म नहीं है। उसमें संसार के समस्त पैगम्बरों की पूजा के लिए गुंजाइश है।